

भारत में टेराकोटा की खोज आधारित ऐतिहासिक अध्ययनRaushan Kumar ^{1*}, Dr Anant Prasad Gupta ^{2**}

1. Research Scholar,

2. Professor

* Faculty of Social Science (Department of History), Purna University, Purnia, Bihar, India

**Faculty of Social Science (Department of History), Purna University, Purnia, Bihar, India

Corresponding Author: Raushan Kumar,**Email address:-** Email- raushankumar1421986@gmail.com

सार: इस शोध पत्र में शोधकर्ता भारतीय टेराकोटा कला की कलात्मक दृश्य भाषा का अध्ययन करना चाहते हैं, जिसकी अवधारणा सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर समकालीन युग तक विकसित होती रही है। मूर्तिकला अथवा टेराकोटा कला के संक्षिप्त इतिहास से जुड़े होने के कारण अन्वेषक उन परिस्थितियों से भली-भांति परिचित हैं, जिनमें निरंतर पीढ़ियों के कलाकारों ने नवाचार करते हुए टेराकोटा कला निर्माण में सामाजिक और औपचारिक समस्याओं का सामना किया है। शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य भारत के विभिन्न राज्यों की समकालीन टेराकोटा कलाओं को प्रस्तुत करना है। इसके साथ ही प्रागैतिहासिक काल से लेकर पहली शताब्दी की शुरुआत से वर्तमान समय तक मिट्टी के बर्तनों और अन्य टेराकोटा कलाकृतियों के भौतिक पहलुओं में हुए विकास का एक व्यापक अवलोकन प्रस्तुत करना भी इसका उद्देश्य है। सिंधु घाटी सभ्यता के समय से ही टेराकोटा भारत में एक प्राचीन और अत्यंत अनुकूल माध्यम रहा है। इस माध्यम ने भारत के विभिन्न राज्यों की टेराकोटा कला को विकसित करने में सहायता की, जहाँ कलाकारों और शिल्पकारों ने मिट्टी से खिलौनों, वास्तुशिल्प संरचनाओं और आभूषणों के रूप में अद्भुत रचनाएँ कीं। इस अध्ययन में पारंपरिक और समकालीन नवाचारों के बीच निरंतरता को उजागर किया गया है, विशेष रूप से टेराकोटा कला के स्वरूप, सामग्री तथा निर्माण विधियों के संदर्भ में।

[Kumar, R. and Gupta, A.P. **भारत में टेराकोटा की खोज आधारित ऐतिहासिक अध्ययन**. *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2025; Volume 2, Issue 1:46-51 (April-June). ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 5.776

मुख्य शब्द: - टेराकोटा, नवाचार (इनोवेशन), वास्तुकला (आर्किटेक्चर), कॉइल तकनीक, स्लेब तकनीक, स्लिप कास्टिंग, मिट्टी के बर्तन (पॉटरी), खिलौने, मॉडलिंग, ग्लेज़िंग।

परिचय: इस शोध पत्र में शोधकर्ता भारतीय टेराकोटा कला की यात्रा का अध्ययन करना चाहते हैं, जो सिंधु घाटी सभ्यता से प्रारंभ होकर आधुनिक काल की पारंपरिक कलाकृतियों तक विस्तारित होती है। शोधकर्ता भारत के पारंपरिक और समकालीन कलाकारों द्वारा उपयोग की गई विभिन्न तकनीकों का विश्लेषण करना चाहते हैं, तथा यह भी प्रस्तुत करना चाहते हैं कि भारत का वैश्विक स्तर पर प्रतिनिधित्व करने हेतु इन कलाकारों ने कितनी मेहनत की है।

पद्धतिगत दृष्टिकोण:

यह शोध पत्र पारंपरिक और आधुनिक भारतीय टेराकोटा कलाओं से संबंधित है, जहाँ कला उत्पाद सीधे शोधकर्ता के नियंत्रण में नहीं हैं। लेखक भारतीय मूर्तिकला कला के प्रति अपनी रुचि के सामान्य क्षेत्र पर चर्चा करना चाहता है। समस्या को समझने और अनुभवजन्य दृष्टिकोण से इसे व्यावहारिक शब्दों में प्रस्तुत करने के लिए पहले चरण में गंभीर प्रयास किए गए।

दूसरे चरण में, विशेषज्ञों द्वारा सभी व्यवहार्य और सिद्ध तकनीकों का पालन किया गया और उन तकनीकों की इस समस्या के साथ स्थिरता का मूल्यांकन किया गया। अंततः, बहुआयामी जानकारी और अनुसंधान समस्या का सटीक समाधान प्राप्त करने के लिए विभिन्न अनुसंधान विधाओं — वर्णनात्मक, अनुभवजन्य, गुणात्मक, मात्रात्मक, सैद्धांतिक,

ऐतिहासिक, अनुदैर्घ्य तथा अवलोकन उपकरणों — का समन्वय किया गया।

शोध का उद्देश्य:

इस शोध का मुख्य उद्देश्य समकालीन जीवन के इर्द गिर्द घूमती-समस्याओं का विश्लेषण करना है। पिछले नौ दशकों के कला उत्पादों ने भारत में मूर्तिकला गतिविधियों के विकास पर गहरा प्रभाव डाला है। स्वतंत्रता के पश्चात् समकालीन भारतीय मूर्तिकारों द्वारा सामना की गई सामाजिक सांस्कृतिक और औपचारिक समस्याओं पर गंभीर-विचारकों ने अपने लेखन और व्याख्याओं के माध्यम से प्रकाश डाला है।

शोध समस्या का क्षेत्र:

अन्वेषक का मानना है कि शोध का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। मूर्तिकारों, सामाजिक वैज्ञानिकों और कला इतिहासकारों के लिए अभी भी ज्ञान के मानक में सुधार की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। इस क्षेत्र में पेशेवर रूप से लिखित सामग्री और गहन विश्लेषण की कमी एक बड़ी चुनौती रही है। कला प्रवृत्तियों में समय के साथ जो परिवर्तन हुआ है, और जो प्रयोग पहले चरण से दूसरे चरण में विकसित हुए, उन्हें और बाद की रचनात्मक यात्राओं में कलाकारों की विचार प्रक्रियाओं को संतुलित करना आवश्यक है। यह शोध वर्तमान पीढ़ी के कला प्रेमियों को बहुआयामी जानकारी प्रदान करने में सक्षम है, जो आज तक उनके लिए अलभ्य रही है।

भौतिक साक्ष्यों का विश्लेषण:

केसुब्रमण्यम जी ., ज्योतिंद्र जैन , ओगंगोली .सी ., एगोस्वामी ., अरुंधति बनर्जी, सुरेंद्र कुमार, रतन परिमू, केशव मलिक, एमन .एस ., आर शिव कुमार ., जोस्तना भट्ट, पी दारोज आदि विद्वानों ने .आर .

टेराकोटा कलाकारों के कार्यों का मूल्यांकन करते हुए यह प्रतिपादित किया है कि मूर्तिकला नवाचार और निरंतरता की एक अभिव्यक्ति है। भारत में टेराकोटा के अभ्यास और वैचारिक दृष्टिकोणों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है, जहाँ टेराकोटा को एक रचनात्मक माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सिंधु घाटी की कला:

यह सभ्यता मुख्यतः सिंधु नदी के तटों पर विकसित हुई थी , इसलिए इसे 'सिंधु घाटी सभ्यता' कहा जाता है। इस संस्कृति के प्रमुख नगर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो थे। सिंधु सभ्यता के लोग हिंदू देवी देवताओं के महान-उपासक थे, जिसका प्रमाण मिट्टी और टेराकोटा से निर्मित कलाकृतियों में मिलता है। वे वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि और आकाश — इन पंचतत्वों का उपयोग टेराकोटा निर्माण में करते थे। सामान्यतः उन्होंने हिंदू देवी - देवताओं, फूलदानों, मानव आकृतियों तथा खिलौनों का निर्माण किया। सिंधु घाटी सभ्यता के विभिन्न स्थलों जैसे बिरहाना , मेहरगढ़, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से देवी माताओं , पुरुष देवताओं, टेराकोटा गाड़ियों, मूर्तियों और पहियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

टेराकोटा कला बंगाल में

बिष्णुपुर नगर, जो पश्चिम बंगाल के बांकुरा जिले में स्थित है , टेराकोटा कला के लिए प्रसिद्ध है। बांकुरा के कारीगरों ने टेराकोटा से घोड़ों , बर्तनों तथा व्यावहारिक मूर्तियों की समृद्ध परंपरा विकसित की है। बिष्णुपुर के मंदिर टेराकोटा शिल्पकला के भव्य उदाहरण हैं। इन मंदिरों का निर्माण इंडो इस्लामिक शैली में किया गया है तथा ये देउल और रत्न प्रकार के- मंदिर हैं। मंदिरों की दीवारों पर पौराणिक कथाओं, पुष्प डिजाइनों और ज्यामितीय आकृतियों का सुंदर चित्रण किया गया है।

बिहार और झारखंड की टेराकोटा कला

कुम्हार समुदाय , जिन्हें 'कुम्हार' कहा जाता है , झारखंड की प्रमुख बस्तियों में पाया जाता है। ये कारीगर घरेलू उपयोग और सजावटी वस्तुओं के लिए मिट्टी से विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाते हैं। एक विशेष बड़े आकार का बर्तन प्रसिद्ध है , जिसका उपयोग महुआ की शराब (स्थानीय रूप से निर्मित शराब) तथा चावल से बनी स्थानीय बीयर बनाने हेतु किया जाता है।

देवगढ़ क्षेत्र के काले चमकदार मिट्टी के बर्तन विशेष रूप से आकर्षक हैं। इसके अतिरिक्त, छत की टाइलों, औपचारिक पानी के घड़े, मिट्टी के कप, लंबी गर्दन वाले फूलदान तथा अन्य उपयोगी बर्तन भी तैयार किए जाते हैं। त्योहारों के मौसम में कारीगर चमकीले रंग के टेराकोटा जानवरों , मूर्तियों और मिट्टी के मंदिरों का निर्माण करते हैं। नुनीहाट क्षेत्र की महिलाएं बड़े आकार के सुंदर टेराकोटा आभूषण भी बनाती हैं। बिहार में मिट्टी और टेराकोटा की परंपरा मौर्य काल से चली आ रही है। आज भी कुछ प्राचीन परंपराओं का पालन किया जाता है, और हर गाँव, जिले एवं क्षेत्र में मिट्टी के बर्तन बनाने की अपनी विशिष्ट शैली है। खिलौनों और

मूर्तियों का निर्माण मुख्यतः मौसमी त्योहारों और धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ा होता है। मिट्टी के हाथी विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं , जिन्हें विवाह के प्रतीक स्वरूप छतों पर रखा जाता है। कुछ मिट्टी के खिलौने विशेष रूप से बच्चों के लिए बनाए जाते हैं , जिन्हें कलाकार बिना तीखे मोड़ों या जटिल आकारों के सरलता से गढ़ते हैं। हाथी , घोड़े और सरीसृप जैसी आकृतियाँ प्रिय वस्तुओं में सम्मिलित हैं।

गुजरात की टेराकोटा कला

गुजरात में मिट्टी के बर्तन बनाना एक अत्यंत प्राचीन और प्रतिष्ठित कला है। ग्रामीण शिल्पकार मिट्टी को सुंदर और संतुलित अनुपात में ढालकर बर्तन बनाते हैं, जिन्हें बाद में चमकीले रंगों से रंगा जाता है, जिससे उनकी सुंदरता बढ़ जाती है। इस क्षेत्र के कलाकार विशेष रूप से कच्छ क्षेत्र से संबंधित हैं। कच्छ के शिल्पकार मिट्टी के बर्तनों के अलावा विभिन्न प्रकार के टेराकोटा खिलौनों और घोड़ों के निर्माण के लिए भी विश्व प्रसिद्ध हैं। साबरकांठा जिले का पोशिना गाँव अपनी पवित्र टेराकोटा मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के गरसिया आदिवासी समुदाय टेराकोटा घोड़ों को अनुष्ठानिक प्रसाद के रूप में भेंट करते हैं। इन टेराकोटा घोड़ों को "घोड़ा देव" कहा जाता है , जो इच्छाओं की पूर्ति का प्रतीक माने जाते हैं। दशकों से ये घोड़े वहाँ स्थिर खड़े हैं और धार्मिक आस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बने हुए हैं।

मध्य प्रदेश की टेराकोटा कला

मध्य प्रदेश के टेराकोटा शिल्प शैली और अभिव्यक्ति दोनों में अद्भुत हैं। बस्तर क्षेत्र के आदिवासी समुदाय द्वारा निर्मित टेराकोटा कलाकृतियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये आदिवासी आधुनिक सभ्यता की जटिलताओं से दूर रहते हुए जीवन के मूल्यों और प्रकृति के प्रति गहन सम्मान रखते हैं। टेराकोटा शिल्प मानव सभ्यता के प्रारंभिक शिल्प प्रयासों का प्रतिनिधित्व करता है , और इसीलिए यह कला आज भी आदिवासी समुदायों में अत्यंत लोकप्रिय है। बस्तर क्षेत्र के टेराकोटा हाथी, सांप, पक्षी और घोड़े अपनी विशिष्ट शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। एक रोचक परंपरा के अनुसार , स्थानीय जनजातियाँ बलि स्वरूप अपने देवताओं को टेराकोटा में निर्मित पशु आकृतियाँ अर्पित करती हैं।

तमिलनाडु की टेराकोटा कला

तमिलनाडु में टेराकोटा कला अपने भव्य छह मीटर ऊँचे टेराकोटा घोड़ों के लिए प्रसिद्ध है। राज्य के अयानार देवालयों में जीवन-आकार के टेराकोटा घोड़े स्थापित किए जाते हैं , जिन्हें अयानार देवता के सैनिकों को रात में गाँव और खेतों की रक्षा हेतु परिवहन प्रदान करने के उद्देश्य से बनाया जाता है। घोड़ों की शैलियाँ क्षेत्र के अनुसार भिन्न होती हैं — कुछ अधिक यथार्थवादी तो कुछ अमूर्त — किंतु सभी घोड़े हार्नेस और लगाम सहित पूर्ण साज-सज्जा में होते हैं और तत्परता की भावना से ओत-प्रोत प्रतीत होते हैं। चूँकि गाँवों में कुम्हारों का मुख्य कार्य बर्तन बनाना होता है , इसलिए इन मूर्तिकला रूपों का निर्माण भी कुंडलन , पीटाई और मॉडलिंग जैसी पारंपरिक तकनीकों से किया जाता है।

राजस्थान की टेराकोटा कला

राजस्थान भी मिट्टी के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध है। जयपुर , सीकर, अजमेर और भरतपुर के कलाकार धार्मिक श्रद्धा से सुंदर टेराकोटा घोड़ों का

निर्माण करते हैं , जिन्हें धार्मिक प्रसाद के रूप में भेंट किया जाता है। बीकानेर का नोहर क्षेत्र टेराकोटा उत्पादों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के कलाकार टेराकोटा बर्तनों पर लाख का कार्य करते हैं और विशेष प्रभाव डालने के लिए सोने का भी उपयोग करते हैं।

अलवर के कलाकार 'कागजी मिट्टी' के अत्यंत हल्के और पतले बर्तन बनाते हैं , जो अपनी उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध हैं। पोखरण क्षेत्र के टेराकोटा बर्तनों में पारंपरिक ज्यामितीय नक्काशी दिखाई देती है , जो प्राचीन शैलियों की निरंतरता का प्रतीक है।

ओडिशा की टेराकोटा शिल्पः

ओडिशा में टेराकोटा कला का इतिहास ईसा पूर्व चौथी शताब्दी से जुड़ा है। यहाँ के आदिवासी कारीगर विशेष प्रकार की मिट्टी का उपयोग कर अद्वितीय डिजाइन तैयार करते हैं , जिनकी मांग देश-विदेश में रहती है। बैल, घोड़े और हाथी जैसी पशु आकृतियों को ढालकर उनके प्राकृतिक रंग में ही छोड़ दिया जाता है। घरेलू उपयोग के अन्य वस्तुएँ जैसे जार , प्लेटें, टाइलें, खिलौने, बर्तन, मोमबत्ती-स्टैंड आदि भी आदिवासी सौंदर्य के साथ बनाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त , चूड़ियाँ और हार सेट जैसे आभूषण भी यहाँ अत्यंत लोकप्रिय हैं।

जम्मू और कश्मीर की टेराकोटा कला एवं शिल्पः

जम्मू और कश्मीर में टेराकोटा कला के दो प्रमुख स्वरूप हैं। लद्दाख में , भगवान बुद्ध की प्रतिमाएँ और चित्र बनाकर इन्हें विभिन्न मठों के लिए तैयार किया जाता है। वहीं जम्मू क्षेत्र में चाय की केतली , जौ के भंडारण पात्र, रसोई के चूल्हे और तेल के दीयों जैसी दैनिक उपयोग की वस्तुएँ बनाई जाती हैं। इन वस्तुओं को सुंदरता से आकार दिया जाता है तथा रंगीन सजावट भी की जाती है। केतलियों को विशेषतः सुंदर चोंच , हैंडल और ढक्कन के साथ सजाया जाता है। निर्माण हेतु साधारण उपकरणों का उपयोग होता है, जैसे चमड़ा, पत्थर और लकड़ी। मिट्टी के मुखौटे भी एक अनूठी विशेषता हैं, जिन्हें कपड़े, ऋ कागज, आटा और गोंद के मिश्रण से तैयार किया जाता है।

भारतीय समकालीन टेराकोटा विधियाँ, नवाचार और कलाकारः

भारतीय टेराकोटा का इतिहास अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण रहा है। इस दस्तावेज में टेराकोटा के विभिन्न कला रूपों , विधियों तथा विकासात्मक संदर्भों की गहन चर्चा की गई है। अध्ययन हेतु अनुभवी कलाकारों, इतिहासकारों और साहित्यिक स्रोतों से प्राप्त अवलोकनों का सहारा लिया गया है। समकालीन भारतीय कलाकारों ने पारंपरिक विधियों से आगे बढ़कर विभिन्न माध्यमों और प्रयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाए हैं।

कलाकारों ने अपनी सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों और रचनात्मक आवश्यकताओं के अनुसार नए तरीके खोजे हैं। वैकल्पिक तरीकों ने उनकी कृतियों को नई दृष्टि और जीवन प्रदान किया है। इन प्रयासों में के. जी. सुब्रमण्यम , विवान सुंदरम , सुबोध गुप्ता , एल. एन. तल्लूर और सुदर्शन शेड्डी जैसे कलाकारों के कार्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। के. जी. सुब्रमण्यम ने भारतीय लोक कला के तत्वों और स्वदेशी तकनीकों को नए दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया। विवान सुंदरम ने नए मीडिया और प्रारूपों का प्रयोग कर दृश्य कला में नवीन प्रयोग किए।

सुबोध गुप्ता ने घरेलू वस्तुओं और आधुनिक जीवन की बुनियादी सामग्रियों के माध्यम से नयी पहचान बनाई। एल. एन. तल्लूर ने भारतीय परंपरा को अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण से जोड़ा और सुदर्शन शेड्डी ने स्थापत्य , मूर्तिकला और पेंटिंग के मध्य की सीमाओं को ध्वस्त किया।

निष्कर्ष :-

यदि हम टेराकोटा के सामान्य स्वरूप और इसके सौंदर्यशास्त्र तथा विकास को देखें , तो पाएंगे कि यह मूर्तिकला के विकास के समानांतर एक दृश्यात्मक यात्रा है। टेराकोटा और मूर्तिकला दोनों त्रि-आयामी सतहों पर छवि निर्माण की विधियाँ हैं , हालाँकि उनकी प्रक्रियाएँ और उपयोग की गई सामग्री भिन्न हो सकती हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर समकालीन युग तक भारतीय टेराकोटा ने यथार्थवाद से अमूर्त अभिव्यक्तिवाद तक विभिन्न शैलियों को अपनाया है। पारंपरिक तकनीकों जैसे कॉइलिंग , स्लैब, स्लिप कार्य और अब नवीनतम 3डी प्रिंटिंग तकनीक के माध्यम से कला में नयी भाषा और सौंदर्यबोध विकसित हुआ है।

चयनित कलाकारों की रचनाओं का विश्लेषण दर्शाता है कि उन्होंने किस प्रकार वैकल्पिक दृष्टिकोण अपनाकर दृश्य कला में नवीनता लाई है। उनके प्रयासों ने भारतीय टेराकोटा को नए विचारों और स्वरूपों के माध्यम से समृद्ध किया है।

यह दृढ़ता से अनुशांसा की जाती है कि टेराकोटा कलाकारों से उनके अनुभवों और विचारों को जानने हेतु संवाद किया जाए। साथ ही , एक ही पीढ़ी के कलाकारों के बीच अंतःक्रिया को प्रोत्साहित किया जाए ताकि टेराकोटा कला में नवाचार को बढ़ावा मिल सके। भारतीय टेराकोटा आज एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है और नई संभावनाओं के द्वार खोलने की दहलीज पर खड़ा है।

संदर्भः

1. क्रैमरिच, एस. (1961)जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज , 20 (4) 559-559।डोई: 10.2307/10.2307.2050001
2. सिंह, एम (1986)हरियाणा में टेराकोटा कला।प्रोसीडिंग्स ऑफ द इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस , 47,166-174.23 मार्च, 2020 को www.jstor.org/stable/44139953 से प्राप्त
3. हक, ई. (1997)बंगाल की प्रारंभिक कला पर विचार।इंडिया इंटरनेशनल सेंटर क्वार्टरली , 24 (2/5) 3) 187-202।23 मार्च, 2020 को www.jstor.org/stable/23005445 से प्राप्त
4. दिन, एस, और दिन, एस (1993)मध्य गंगा घाटी के दो लौह युग स्थलों में टेराकोटा।भारतीय मानवविज्ञानी , 23 (1) 35-42।23 मार्च, 2020 को www.jstor.org/stable/41921804 से प्राप्त
5. क्लार्क, एस (2003)सिंधु शरीर प्रतिनिधित्वः लिंग , लिंग, कामुकता, और हड़प्पा से मानवजनित टेराकोटा मूर्तियाँ।एशियाई परिप्रेक्ष्य , 42 (2) 304-328।23 मार्च, 2020 को www.jstor.org/stable/42928582 से प्राप्त
6. चौधरी, आई (2013)शांतिनिकेतन-नए भारतीय तीर्थ का निर्माण।सार्वजनिक इतिहासकार , 35 (2) 99-103.डोई: 10.1525/10.1525 टीएचएफ।2013.35.2.99

7. कपूर, जी (1990)समकालीन सांस्कृतिक अभ्यास: कुछ ध्रुवीय श्रेणियाँ।सामाजिक वैज्ञानिक, 18 (3) 49-59।डीओआई: 10.2307/10.2307.3517425
8. सांभरानी, सी (2014)कनेक्टिविटी में एक प्रयोग: 'वेस्ट स्काई' से 'सेंट्रल स्टेट' तक।समकालीन एशियाई कला और प्रदर्शनियों में एंटोनेट एम एंड टर्नर सी (लेखक): कनेक्टिविटी एंड वर्ल्ड मेकिंग (पीपी। 89-108)एनयू प्रेस। 23 मार्च, 2020 को www.jstor.org/stable/j.ctt13wv81.8 से प्राप्त
9. 23 मार्च 2020 को <https://www.mapsofindia.com> से प्राप्त वेबसाइट
- 10.23 मार्च 2020 को वेबसाइट <https://www.gujaratexpert.co> से लिया गया
11. सिंह जी, सर्व एम. के., गुप्ता एन.बांग्लादेश के संदर्भ में कोटा के बाद

- के युग में भारतीय कपड़ा उद्योग।इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोसोशल रिहैबिलिटेशन, 24 (5) 2020।
12. दार एच. कश्मीर घाटी में हिंदू धार्मिक प्रेरणाएँ।इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिलीजियस टूरिज्म एंड पिलग्रिमेज, 8 (3) 2020।
13. कारकी टी. भारत में सरकार बनाम निजी क्षेत्र के नेतृत्व वाली स्मार्ट ग्राम विकास नीतियां और कार्यक्रमाविज्ञान और प्रौद्योगिकी में मॉडलिंग और अनुकूलन, 17,2020।
14. चौदह के. ऐतिहासिक नाटक: क्या इतिहास और साहित्य संघर्ष में हैं?आई. यू. पी. जर्नल ऑफ इंग्लिश स्टडीज, 6 (2) 2011.
15. राणा एम. रिक्स्ट्रक्ट हिस्ट्री: जापानी संस्कृति की टोही और पहाड़ियों के हल्के दृश्य में कजुओ इशिगुरो द्वारा उन्मुखा।इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड साइंस एंड टेक्नोलॉजी, 29 (3) 2020

Figure No .1 Female figure with painted ornaments from Harappa Image Source Retrieved on 24 March 2020 from www.harappa.com size: (W x H x D): 4.8 x 8.1 x 3.1 cm.



Figure No .2 Early female figurine with painted features from Harappa, Image Source Retrieved on 24 March 2020 from www.harappa.com,size (W x H x D): 3.7 x 7.9 x 2.4 cm.



Figure No .3 The terracotta and Bankura horse of Bengal, Image Source Retrieved on 24 March 2020 from media.tradeholding.com, size 6 inches to 4 feet.





Figure No .4 Madan-Mohan Temple, Bishnupur, Bankura, Image Source Retrieved on 24 March 2020 from amitguha.blog.



Figure No .5 Terracotta horses, Source Retrieved on 24 March 2020 from www.historyspeaks.co.in

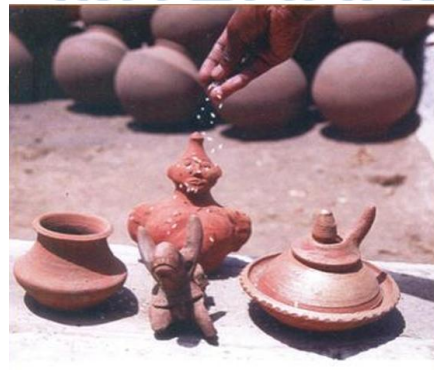


Figure No .6 Terracotta toys and pots, Source Retrieved on 24 March 2020 from shreyasbalayatanmuseum.weebly.com



Figure No .7 Terracotta artwork Rajasthan, Image Source Retrieved on 25 March 2020 from ohmyrajasthan.com

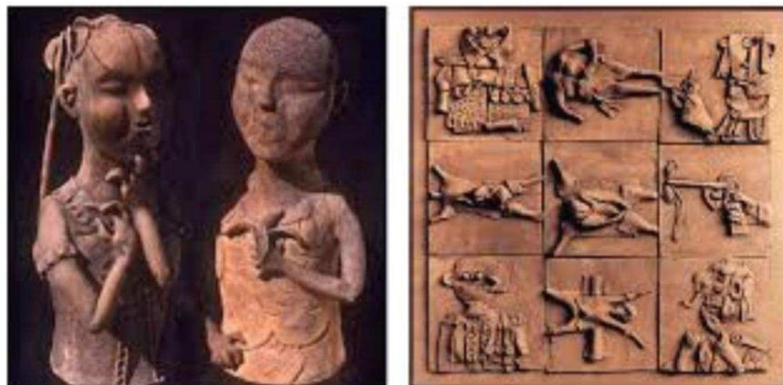


Figure No.8 Terracotta animal figure, Semthan (Courtesy: Private collection) Source Retrieved on 25 March 2020 from www.sahapedia.org



INTERNATIONAL JOURNAL OF
INTERPRETATION
OBSERVATION & ANALYSIS